Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University, Kanpur

Answer Script Details
Barcode 5344481

Roll No. 24029000803
Total Mark 47/75.00

Exam MASTER OF ARTS_ODD EXAM-DEC-24
Subject A010703T - PRACHEEN EVAM MADHYAKALEEN KAVY

Question wise Mark Summary

Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark	Q.No	Mark
1A	2/5						
1B	3/5						
1C	3/5						
1D	3/5						
1E	3/5						
1F	2/5						
1G	2/5						
1H	3/5						
1I	3/5						
2	11/15						
3	NA/15						
4	NA/15						
5	NA/15						
6	NA/15						
7	NA/15						
8	12/15						
9	NA/15						

Chhatrapati Shahu Ji Maharaj University
Kanpur, Uttar Pradesh

PART-II

Date of Exam: 03-01-2025 Shift: I[st] Room No.: 03
Paper Code: A010703T Subject: Pracheen evam madhyakalin kavya Year/Sem: I-sem
Name of Candidate: Ragini
Roll No.: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

COE Facsimile

Signature of Invigilator

Signature of Candidate: Ragini

MARKS OBTAINED										
Q.	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
(a)										
(b)										
(c)										
(d)										
(e)										
(f)										
(g)										
(h)										
(i)										
(j)										
Total										

Total Marks in Figures — Max. Marks

Total Marks in Words

A010703T
Paper Code

Signature of Evaluator

Course: Master of Art (Hindi)

Session: 2024-25 Year/Semester: I-Sem

Subject Name: Prachin evam madhyakalin kavya

Medium: English ○ Hindi ●

Paper Code: A 0 1 0 7 0 3 T

Exam Date: 0 3 0 1 2 0 2 5

Name of Candidate: R A G I N I

Father's Name: V I N D H Y A C H A L S H A R M A

महाविद्यालय का कोड
College Code: K N 0 0 9

परीक्षा केन्द्र का कोड
Exam Centre Code: K N 0 0 9

परीक्षा का प्रकार
Type of Exam: संस्थागत Regular ● ; भूतपूर्व परीक्षार्थी Ex-Student ○ ; व्यक्तिगत Private ○ ; बैक पेपर परीक्षा Back Paper Exam ○

ANSWER BOOKLET NO.

5344481

A010703T
Paper Code

नामांकन संख्या
Enrollement Number: C S J M A 2 4 0 0 0 1 5 9 1 9 0

परीक्षार्थी अनुक्रमांक संख्या Candidate's Roll Number: 2 4 0 2 9 0 0 0 8 0 3

पेपर कोड Paper Code: A 0 1 0 7 0 3 T

Signature of Candidate: Ragini

Signature of Invigilator

C S Facsimile

COE Facsimile

नोट- 1. परीक्षार्थी को निर्देशित किया जाता है कि आवरण पन्ने के पृष्ठ भाग पर अंकित सभी निर्देशों को सावधानी पूर्वक पढ़ें।
2. अंकित में भरी जाने वाली प्रविष्टियाँ बायीं तरफ से शुरू की जायें। 3. गोलों को काले या नीले बॉलपेन से भरा जायें।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-I

1. Read the instructions carefully given on the answer script and admit card.
2. Write Date of Exam, Shift, Paper Code & Name of Subject Correctly.
3. Write Name & Roll No. Correctly.
4. Write Semester & Branch Correctly.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-III

1. Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ boxes.
2. Carefully study the example before you start marking.
3. As shown in the example below, blacken thecircles completely.

Correct Method: ① ● ③ ④

Incorrect Method: ✓ ✗ ◉ ⊙

4. Make no Stray marks o n this sheet.

5. DO NOT WRITE OR MARK ON THE BAR CODE.

IN ORDER TO AVOD UFM (UNFAIR MEANS) :

1. The Roll No. and Answer Book no. found elsewhere or any other symbol found in the answer book will be treated as unfair means.
2. Any tempering of Bar Code and Booklet no shall be treated as Unfair Means.
3. Do Not bring the materials like slip of paper/mobile/digital diaries/ study material/ revision notes in examination hall. Possession of the mobiles/ digital diaries/electronic/digital/ watch and any other electronic gadget except memory less scientific calculator shall be considered as UFM case.
4. Do not keep or paste currency note in answer script it shall be consider as UFM.

अनुचित साधन से बचने हेतु :

1. उत्तर पुस्तिका के निर्देशित स्थान को छोड़कर अनुक्रमांक एवं उत्तरपुस्तिका का क्रमांक कहीं और न लिखे तथा कोई भी चिन्ह न बनायें क्योंकि यह अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।
2. उत्तर पुस्तिका के बारकोड अथवा उत्तर पुस्तिका संख्या पर छेड़ छाड़ करने पर अनुचित साधन प्रयोग माना जायेगा।
3. परीक्षा कक्ष में निम्न वस्तुएं साथ न लायें, जैसे लिखे हुए कागज के टुकड़े, मोबाईल, डिजिटल डायरी, डिजिटल वॉच, कॉपी, पुस्तक या सभी वस्तुएं जो अनुचित साधन के अन्तर्गत आती है। केवल संबंधित प्रश्नपत्र में ही मेमोरी लेस साइंटिफिक कैल्कुलेटर ले जाने की अनुमति होगी।
4. उत्तर पुस्तिकाओं में रूपये न रखें न ही उत्तर पुस्तिका में चिपकायें। ऐसा करना अनुचित साधन प्रयोग की परिधि में आता है।

परीक्षार्थियों के लिए निर्देश

1. प्रवेश पत्र एवं उत्तर पुस्तिका पर दिये गये निर्देशों को ध्यान से पढ़े।
2. कवर पृष्ठ के दूसरी तरफ कुछ न लिखें।
3. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठो पर दोनो तरफ लिखें।
4. प्रश्न पत्र पर अपने अनुक्रमांक के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
5. प्रश्न पत्र कोड एवं प्रश्न पत्र ID सावधानी पूर्वक लिखें।
6. अपनी स्थिति स्पष्ट लिखें।
7. उत्तर पुस्तिका के पृष्ठो की संख्या देखें। अगर उत्तर पुस्तिका में पृष्ठ (1-24) से कम है या फटे हुए है, तो प… शुरू होने के पूर्व दूसरी उत्तर पुस्तिका ले लें।
8. प्रश्नपत्र को देख , यदि प्रश्नपत्र के विषय कोड, विषय का नाम तथा प्रश्न में कोई त्रुटि है तो उसके परीक्… होने के 30 मिनट के अन्दर कक्ष निरीक्षक को तत्काल सूचित करें, उसके बाद विश्वविद्यालय द्वारा कोई … नहीं की जायेगी।
9. प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये पेंसिल का प्रयोग न करें।
10. बी कॉपी या अतिरिक्त पन्ना नहीं दिया जायेगा।

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE

1. Read the instructions carefully given on the Question Paper, Admit Card & Answer Script.
2. Do not write anything on back side of the cover page.
3. Write on both sides of pages of answer book.
4. Do not write anything on question paper except Roll Number.
5. Write Paper Code & Question Paper Id carefully.
6. CHECK the number of pages (1-24) or any other kind of damage in your answer script, if found than change the answer script immediately before the commencement of examination.
7. CHECK the Question Paper for any kind of discrepancy e.g. Subject Code, S… Name, and Question of the Question Paper during first THIRTY MINUTES of commencement of the exam, so that it can be corrected in TIME. After that no corrections shall be entertained by the university.
8. Do not use pencil for answering the question.
9. Write status correctly e.g. those appearing in carry over papers should fill in sta… as Carry Over. Those appearing as Ex- Students should fill in status as ex.
10. No supplementary answer book & graph paper will be provided.

INSTRUCTION TO THE CANDIDATE FOR FILLING PART-IV

1 Use blue or black ball point pen for writing alphabets & numerals in ☐ Boxes.
2 Use blue or black ball point pen for filling the circles.

	1	8	1	5	4	3	2	1	6	9
0	0	0	0	0	0	0	0	0	0	0
1	●	1	●	1	1	1	1	●	1	1
2	2	2	2	2	2	2	●	2	2	2
3	3	3	3	3	3	●	3	3	3	3
4	4	4	4	4	●	4	4	4	4	4
5	5	5	5	●	5	5	5	5	5	5
6	6	6	6	6	6	6	6	6	●	6
7	7	7	7	7	7	7	7	7	7	7
8	8	●	8	8	8	8	8	8	8	8
9	9	9	9	9	9	9	9	9	9	●

Note- If your Roll No. is of 10 digits. Please leave first three columns .

Paper Code

A 0 1 0 7 0 3 T

उत्तर सं- 1 (A)

मैथिल कोकिल विद्यापति का जन्म एक अत्यन्त सुखद समृद्ध, सुप्रसिद्ध परिवार में मिथिला में हुआ था।

इनका परिवार के पूर्वज प्राचीन काल से ही अत्यन्त विद्वान एवं सुप्रसिद्ध थे। इनमे से अनेक था तो कोई सामंत या मंत्री थे या किसी राजा का दरबारी कवि।

विद्यापति भी ऐसी पारिवारिक परिवेश मे बड़े हुए तथा उनका वातावरण के कारण वे भी अत्यन्त विद्वान थे। इनकी विद्वता के कारण एक बार राजा जयसिंह ने इन पर मोहित होकर उन्हे एक गाँव ही दान मे दे दिया।

विद्यापति श्रृंगार रस के कवि है या भक्ति के इस पर विद्वानो में अभी भी मतभेद है।

किंतु श्रृंगार हो या भक्ति विद्यापति ने दोनो ही विषय पर अनेक सुव्यवस्थित ग्रन्थ लिखे है तथा उनके मूल भाव को उजागर किया है।

विद्यापति ने मुख्यत: तीन भाषाओ मे अपनी रचनाए लिखी है।

Paper Code: A010703T

i, संस्कृत में
ii, अवहट्ट में
iii, लोकभाषा में

इनका ऐतिहासिक ग्रंथ कीर्तिलता संस्कृत में है तथा इनका श्रृंगारिक ग्रंथ कीर्तिपताका अवहट्ट में लिखी प्राप्त हुई है।

किन्तु इन्हें केवल तथा हिंदी साहित्य मे प्रसिद्धि इनके सुविख्यात ग्रंथ 'पदावली' से ही मिली है जिसमें इन्होंने अनेक श्रृंगारिक व भक्ति के दोहे लिखे है।

इसका सं :- 1 (B)

रासो ग्रंथों के आविर्भाव व काल तथा पात्रो पर प्राचीन काल से ही विद्वानों मे मतभेद रहा है।

रासो परम्परा के कवियो ने मुख्यतः वीरकाव्य ही लिखे है। तथा इनमें श्रृंगारिकता की झलक भी दिखाई पड़ती है।

रासो काव्य परम्परा के ही कवि चन्दबरदाई है जो पृथ्वीराज तृतीय के सामंत तथा राजकवि थे इन्होंने पृथ्वीराज के जीवन वर्णन एवं उनके द्वारा किए गए कार्यो का समुचित वर्णन अपने ग्रंथ पृथ्वीराज रासो मे किया।

Paper Code
Ap 1 0 1 0 8 7

पृथ्वीराज रासो के रचयिता चन्दबरदाई हैं। जो पृथ्वीराज के दरबारी कवि थे।

पृथ्वीराज रासो में प्राचीन काल से चली आ रही काव्य परम्परा के अनुसार ही अत्यन्त यह काव्य रचना हुई है।
इसमें जगह जगह पर काव्यगत सौंदर्य का प्रयोग हुआ है।

पृथ्वीराज रासो एक रासो काव्य परम्परा का ग्रन्थ है। जिसमें चन्दबरदाई ने अपनी विद्वता का परिचय दिया है वे युद्ध कला में निपुण थे ही साथ ही वे काव्य रचना भी करते थे।

पृथ्वी राज चौहान के मुहम्मद गौरी से युद्ध करने के बाद चन्दबरदाई भी उनके साथ चले जाते हैं तथा अपने ग्रन्थ को पूर्ण करने के लिए अपने पुत्र जल्हण को सौंप जाते हैं।

पुस्तक जल्हण हाथ धरि, चलि चन्द नृप काज ॥

पृथ्वीराज रासो में काव्य सौन्दर्य का भरपूर प्रयोग हुआ है इसमें उन्होंने श्रृंगार रस तथा वीर रस का भरपूर प्रयोग किया है। तथा अपने काव्यगत विद्वता का परिचय दिया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

उत्तर सं० – 1(c)

हिन्दी साहित्य के इतिहास में कबीरदास का नाम बड़े ही आदर के साथ लिया जाता है। क्योंकि कबीरदास एक कवि के साथ एक सच्चे समाजसुधारक थे।

उन्होंने अपने जीवन काल में जनकल्याण को बहुत अधिक महत्व दिया तथा अपना सम्पूर्ण जीवन लोकमंगल को समर्पित कर दिया।

कबीरदास की भक्ति अपने आराध्य के प्रति थी जो किसी आकार का नही बल्कि निराकार थी

कबीर निर्गुण भक्ति धारा के एक संत कवि थे जिन्होंने साकार की अपेक्षा निराकार ईश्वर को अधिक महत्व दिया।

उन्होंने अपने निर्गुण ब्रह्म को परमात्मा कहा है तथा जीव को जीवात्मा। उन्हें उनके अनुसार जीवात्मा रूपी मानव सम्पूर्ण जगत में मोह व अर्थात अपने परमात्मा से मिलने के लिए विचरण करता रहता है तथा अंततः अपने जीवन के मोह से निकलकर अपने परमात्मा को प्राप्त कर लेता है।

कबीरदास के अनुसार परमात्मा का कोई रूप नही है, वे निराकार, निरंजन है। जो हर जगह व्याप्त

Paper Code

अर्थात सर्वव्यापी है। कबीर के हिन्दु या मुस्लिम होने पर भी मतभेद है। कुछ लोग इन्हें पंजाबी मानते हैं क्योंकि इनके काव्य में कई जगह पंजाबी भाषा के शब्द मिलते हैं।

आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार - कबीर भाषा के डिक्टेटर हैं, वो काव्य में जो कहना चाहते हैं उसे अपने अनुसार कहलवा लेते हैं। इनके भाषा में कबीर की बहुत पकड़ थी कबीर के भाषा में अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं। अतः कबीर की भाषा को पंचमेल खिचड़ी भी कहा गया है इन्होंने गुरु को गोविंद से भी ऊपर बताया है।

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पायँ।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताए।।"

उत्तर सं० - 1(D)

मलिक मुहम्मद जायसी सूफी प्रेमाख्यान परम्परा के एक बहुत ही प्रतिष्ठित नाम हैं।
उन्होंने सूफी काव्य परम्परा के क्षेत्र में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

इन्होंने उस समय की सामाजिक एवं राजनैतिक दशाओं को देखते हुए काव्य रचना की है अतः

Paper Code

उनके काव्य मे तत्कालीन समाज की सामाजिक राजनैतिक आर्थिक स्थिति की झलक साफ देखने को मिलती है।

मलिक मोहम्मद जायसी ने कई रचनाए लिखी जैसे

(i) पदमावत
(ii) अखरावट
(iii) आखिरी कलाम

किन्तु इनमे पदमावत इनका सुप्रसिद्ध महाकाव्य है। इस महाकाव्य मे इन्होंने सिंहलद्वीप के राजा सूरसेन की पू पुत्री पदमावती का वर्णन देखने को मिलता है।

जिसका विवाह चितौड़ के राजा रत्नसेन से हुआ था। राजा रत्नसेन की एक पत्नी नागमति थी। जब रत्नसेन के प्रिय शुक हीरामन ने नागमति के सम्मुख पदमावती के सौंदर्य का बखान किया तब नागमति ने क्रोध मे आकर हीरामन को मारने का आदेश दे दिया

किंतु हीरामन ने राजा रत्नसेन को पदमावती के सौंदर्य का वर्णन सुना दिया तथा राजा आशक्त हो गए तथा एक वैरागी की भाति पदमिनी को पाने के लिए तप करते सिंहलद्वीप जा पहुंचे जहा वहा के नरेश ने विधिपूर्वक पदमावती का विवाह रत्नसेन से करा दिया।

Do Not Write anything in this Portion

उत्तर सं. – 1 (E)

सूरदास ब्रजभाषा के कवि हैं। इन्होंने अपने जीवन काल में श्री कृष्ण की अथाह भक्ति की है तथा श्री कृष्ण की भक्ति पर ही काव्य रचनाएं भी लिखी हैं।

सूरदास के जन्म के सम्बंध में विद्वानों में मतभेद हैं कुछ विद्वान उनका जन्म 1539 तो कुछ 1555 मानते हैं।

सूरदास का जन्म स्थान काशी शिवपुरी है इसके सम्बंध में प्रचलित है।

पद्रह सौ पचपन बिहे।
चन्दवार एक वार लिखे॥
शिवपुरी काशी के बिर
प्रगट भयो कवि तीर॥

सूरदास ने कृष्ण भक्ति के काव्य रचनाएं की हैं जिन्होंने अपने आराध्य श्री कृष्ण की लीलाओं एवं उनके स्वरूप का वर्णन किया है किन्तु यदि इसका रहस्यवादी अर्थ की बात करें तो वे स्वयं को जीवात्मा बताते हैं तथा श्री कृष्ण को परमात्मा बताते हैं।

तथा उनकी भक्ति का साध्य परमात्मा की प्राप्ति है

Do Not Write anything in this Portion

सूरदास के अनुसार परमात्मा की भक्ति के माध्यम से जीवात्मा परमात्मा को प्राप्त कर सकती है।

तथा भक्ति के माध्यम से सूरदास ने अपने ब्रह्म को पाने का एक मार्ग प्रशस्त किया है उनके अनुसार ब्रह्म को पाने का एक मार्ग स्मरण ही उसमे विलीन हो जाए।

सूरदास ने अपने दार्शनिक तर्क से परमात्मा को दर्शन का मत प्रशस्त किया है।

उत्तर सं - 1 (f)

तुलसीदास को हिन्दी साहित्य के इतिहास मे एक समन्वयवादी कवि के रूप मे देखा जाता है।

तुलसीदास का जन्म सन् 1498 मे काशी के एक राजापुर नामक गाव मे काशी के घाट के पास हुआ था।

वे जन्म से ही श्री राम के भक्त थे। अपने वैवाहिक जीवन मे उन्होंने उतना समय नही किया राम को भक्ति को किया है।

उन्होंने सिर्फ काशी मे ही नही बल्कि अनेक देखे

Paper Code

प्रदेशों में जाकर श्री राम की भक्ति का वर्णन किया तथा अनेक भजन कीर्तन किए

तुलसीदास ने अपने जीवन काल में अनेक राज्यों का भ्रमण किया तथा उन प्रदेशों की भाषाओं में काव्य किया
जिससे उनके काव्य में अनेक प्रदेशों की भाषाओं का समन्वय हो गया
तुलसीदास अपने अपार ज्ञान के भण्डार के कारण अपनी काव्य रचनाओं में अलग अलग प्रदेशों की भाषाओं तथा उनकी रचनी शैली का समन्वय कर देते थे।

जिससे उन्हें समन्वयवादी कवि कहा जाता है क्योंकि वे भिन्न भिन्न भाषाओं एवं शैलियों का समन्वय करके अप्रतिम काव्य रचनाएं करते।

अपने काव्य में श्री राम को आराध्य मानकर उनकी आराधना करते हुए कवि तुलसीदास ने परब्रह्म की आराधना की है क्योंकि वे श्री राम को परब्रह्म मानते थे तथा उनके भक्ति के माध्यम सगुण तथा निर्गुण दोनो था इस प्रकार उन्होंने अपने काव्य में सगुण तथा निर्गुण दोनो भक्तियों का समन्वय किया है इस लिए जन मानस तथा हिन्दी के विख्याता इन्हें समन्वयवादी कवि कहा गया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

उत्तर सं० - 1 (a)

रीतिकाल हिन्दी साहित्य के इतिहास में सबसे लम्बे समय तक चलने वाला काव्य है।
इस काल में सामंती व्यवस्था प्रधान थी
रीतिकालीन विशेषताऐं में से उस समय के प्रचलित काव्यगत विशेषताए शामिल है
जैसे (i) श्रृंगार परक रचनाएँ
(ii) नारी सौंदर्य वर्णन
(iii) नख शिख वर्णन
(iv) आश्रयदाताओं की प्रशंसा

इत्यादि। इस काल के कवि अधिकतर इन्ही विषियाओं पर काव्य रचना करते थे।

किंतु कुछ कवि ऐसे भी हुए जिन्होंने इससे अलग हटकर रचनाए की जिनमें केशवदास, भूषण, मतिराम जैसे कवियों ने अपनी काव्य विद्वता दिखाते हुए अपने काव्य रचनाए की।

इन कवियों में बिहारी दास प्रमुखतः श्रृंगार रस के कवि है इन्होंने अपने काव्य में काव्य में श्रृंगार रस के माध्यम से अपने आराध्य की भक्ति भी की है साथ ही अपने ज्ञान से आत्मा के परमात्मा के मिलन का मार्ग भी प्रस्तुत किया है
इनके काव्य मे रहस्यवादी बौद्ध शाखी है जिससे इनके काव्यों का अलग अलग अर्थ निकलता है

Paper Code

11

"मेरी भव बाधा हरौ, राधा नागरी सोई।
जाकि तन की झाई पड़े, स्याम हरित दुति होई।"

इस काव्य में एक तरफ तो बिहारी राधा जी की सब सौंदर्य का बखान कर रहे हैं जिसके तन की परछाई पड़ने से श्याम भी हरि हो जाते हैं

एक तरफ परमात्मा से कह रहे हैं की मेरी संसार रूपी बाधाओं को हर लिए जिससे मैं आपके ये मोह जाल से निकलकर इस संसार को त्यागकर आपमें विलीन हो जाऊं।

उत्तर सं० 2 (ग)

रीतिकालीन कवियो में तीन प्रकार के कवि हुए है जिन्ने अपने २ मतानुसार उसमें इस समय व्याप्त सामाजिक स्थितियो को अपने काव्य में उजागर किया है। ये तीन प्रकार है—

(i) रीतिसिद्ध कवि
(ii) रीतिबद्ध कवि
(iii) रीतिमुक्त कवि

रीतिसिद्ध कवियो में घनानन्द का नाम अत्यंत आदर्श से लिया जाता है क्योंकि घनानन्द ने अपने काव्य में अनेक विशेषता समाहित किया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

तत्कालीन परिस्थितियों की वर्णन - घनानन्द ने अपने काव्य में रीतिकाल में व्याप्त तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन किया है। तथा उनमें व्याप्त बुराइयों को उजागर भी किया है। तथा इस समय के विशेषताओं की कटु आलोचना भी की है।

श्रृंगारिकता - घनानंद ने अपने काव्य में श्रृंगार रस का बहुलता से प्रयोग किया है। तथा उनके काव्य से श्रृंगार रस की अनुभूति भी सबल है।
घनानंद ने अपने काव्य में श्रृंगार रस के काव्यगत सौंदर्य का प्रयोग भी किया है।

प्रेम की भावना - घनानंद को प्रेम का पीर कवि भी कहा गया है।
क्योंकि घनानंद ने अधिकतर रचनाएं प्रेम से परिपूर्ण लिखी हैं।

उनकी रचनाएं में प्रेम एक प्रमुख विषय है इन्होंने अपने काव्य में प्रेम को प्रथम स्थान दिया है। तथा काव्यगत सौंदर्य का भी प्रयोग भरपूर किया है।

घनानंद ने अपनी प्रेमिका सुजान के सम्बन्ध में

सुजान चरित नाम से एक रचना की है जिसमें उनके प्रेम की कथा साफ उजागर है।

Paper Code

उत्तर सं - 1 (I)

कबीरदास भक्तिकाल के एक संत कवि है। जिन्हे भक्तिकाल के एक अमूल्य धरोहर भी कहा जा सकता है।

कबीरदास ने अपने जीवन काल मे जनकल्याण के लिए अत्यंत संघर्ष किए तथा स्वयं एक ऐसे पायदान पर खड़े थे जहा से एक ओर हिन्दू समाज था तथा एक ओर मुस्लिम धर्म थे एक ओर संत काव्य था एक ओर भक्ति काव्य थी

कबीरदास सिर्फ एक कवि ही नही वरन् एक दार्शनिक भी थे। उन्होने अपने काव्य मे अपने दर्शन का प्रयोग किया है।

कबीरदास भक्तिकाल के निर्गुण काव्यधारा के एक संत कवि थे।
उन्होने सगुण भक्ति की अपेक्षा निर्गुण भक्ति को अधिक महत्व दिया किंतु सगुण के बिना निर्गुण का कोई आधार नही ये दोनों परस्पर विरोधी ना होकर एक दूसरे के पूरक है।

इनके अनुसार परमात्मा एक ही है तथा हम सब जीवात्मा है जो परमात्मा की प्राप्ति हेतु संसार रूपी जाल मे फसे हुए है।
तथा परमात्मा की प्राप्ति हमे हमे निर्गुण ब्रह्म की साधना करके ही प्राप्त हो सकती है

Do Not Write anything in this Portion

कबीर ने राम का अर्थ अयोध्या के राम जी
से नाम लेकर इन्होंने परमात्मा को बताया
है।
इन्होंने राम कहकर परमात्मा को सम्बोधित किया
है इनके अनुसार राम कोई भगवान नहीं
बल्कि उनके निर्गुण त्रिकाल निराकार ब्रह्म
है जो सर्वव्यापी है। तथा उन्हें
किसी रूप की आवश्यकता नहीं उनकी साधना
मन से होनी चाहिए और मन ही साधना
करने के लिए किसी साकार स्वरूप की
आवश्यकता कभी नहीं पड़ी।

Paper Code

15

खण्ड – ब

उत्तर सं० – 2

मैथिल कोकिल विद्यापति का जन्म बिहार के मिथिला में एक सुप्रसिद्ध, धनाढ्य एवं सुविख्यात परिवार में हुआ था।

इनके पूर्वज अत्यंत विद्वान ... धनी थे इनमें से प्रत्येक या तो ... सामंत या मंत्री था या किसी राजा का दरबारी कवि।

पिता विद्यापति भी ऐसी पारिवारिक परिवेश में बड़े हुए जिसमें विद्वता इन्हें अपने परिवार से मिला तथा प्रसिद्धि इन्होंने स्वयं अर्जित कर ली

विद्यापति आदिकालीन कवि हैं इस काल में कवि अपनी सामाजिक परिस्थितियों के अनुरूप ही काव्य रचनाएं करते थे।

जिससे उस काल में राजशाही विद्यमान था इस कारण इस काल के कवि अपने काव्य में राजा की वर्णन करते थे।

इसी प्रकार विद्यापति ने भी तीन ग्रन्थ लिखे–

i) कीर्तिलता
ii) कीर्तिपताका
iii) पदावली

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

कीर्तिलता– कीर्ति लता मे इन्होने ध भिसिंह के राजा कीर्तिसिंह तथा तथा राजा शिवसिंह के युद्ध का वर्णन किया है।

कीर्तिपताका — इस ऐतिहासिक ग्रंथ में इन्होने अपने राजा शिवसिंह एवं मिगध के राजा देव सिंह के पुत्री कीर्ति के प्रेम सम्बध का वर्णन किया है। अतः ये इनका श्रृगारिक ग्रंथ है।

पदावली– इस ग्रंथ से ही विद्यापति को प्रसिद्धी मिली इस काव्य ग्रन्थ में श्रृगार रस तथा भक्ति दोनो के ... दोहे प्राप्त हुए है।

विद्यापति ने मुख्यतः तीन भाषाओ मे काव्य रचना की।

संस्कृत में
अवहट्ट मे
लोक भाषा अर्थात मैथिलि में

संस्कृत एवं अवहट्ट में मे विद्यापति ने रचनाए तो कि किंतु संस्कृत अत्यन्त कठिन भाषा है तथा अवहट्ट लोगो को समझ ही नही आति इसलिए विद्यापति

Paper Code

17

ने जनभाषा मैथिलि मे काव्यरचना किया —

देसिल बैना सब जन मिठ्ठा ||

देशी भाषा सबको पसंद आती है|

विद्यापति ने श्रृंगार रस तथा भक्ति दोनो के काव्य रचनाए की है तो विद्वानो मे परस्पर मतभेद है कि विद्यापति श्रृंगार रस के कवि है या भक्ति के|

किंतु यदि विद्यापति श्रृंगार रस के कवि है तो वे भक्त कवि नही हो सकते और यदि भक्त कवि है तो श्रृंगारिक कवि नही हो सकते क्योकि ये दोनो परस्पर विरोधी प्रवृत्तिया है|

अतः विद्वानो ने अपने अपने मतानुसार विद्यापति को श्रृंगार अथवा भक्त कवि सिद्ध किया है|

विद्यापति भक्त कवि है —

विद्यापति भक्त कवि है ऐसा कई विद्वानो का मानना है क्योकि विद्यापति ने अनेक भक्तिपरक रचनाए कि है| अपनी रचनाओ मे इन्होने, कृष्ण, राम, शिव, पार्वती एवं शक्ति की देवी की भी उपासना की है|

विद्यापति ने शिव शंकर की भक्ति की है तथा

Do Not Write anything in this Portion

तथा शक्ति की देवी की आराधना भी की है

विद्यापति ने अपने जीवन काल मे रचित पदावली में अपने भक्त स्वरूप को दिखाया है तथा अपने आराध्य शिव की प्रशंसा की है।

विद्यापति भक्त कवि है इस पर आचार्य शुक्ल ने कहा है कि जिस प्रकार विद्यापति की शिव महिमा एवं देवी का आराधना की है उसे भक्त कवि ही कर सकता है।

विद्यापति श्रृंगारी कवि है-

विद्यापति श्रृंगारी कवि है ये बहुत से विद्वान सिद्ध कर चुके है।

विद्यापति के पदावली से प्राप्त दोहो को पढ़ने पर जिस प्रकार का काम सौंदर्य वर्णन विद्यापति ने किया है वो एक श्रृंगारी कवि ही कर सकता है।

विद्यापति ने पदावली की राधा को एक वासना मे लिप्त नायिका बताया है तथा कृष्ण को नायक उनके अनुसार राधा वो राधा नही जो श्री कृष्ण से प्रेम करती है

Paper Code

19

कृ वो राधा है जो कृष्ण के प्रति वासना एवं काम से आसक्त है। तथा कृष्ण एक कामपिपासु नायक है।

इस प्रकार विद्यापति ने श्री कृष्ण एवं राधा के अनंत प्रेम को एक काम की चाह बताया है तथा राधा के अंगों तथा नखशिख वर्णन किया है।

विद्यापति ने अपने पदावली में राधा को नायिका तथा कृष्ण को नायक बताते हुए एक प्रेमी जोड़े में किस प्रकार वासना की चाह होती है ये बताया तथा दर्शाया है।
इस प्रकार का नखशिख वर्णन एक श्रृंगारी कवि ही कर सकता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

खण्ड - स

उत्तर संख्या - 8

तुलसीदास

हिन्दी साहित्य के इतिहास मे आदिकाल के पश्चात के समय को भक्ति काल कहा जाता है।
भक्तिकाल मे भक्ति की रचनाए होती थी तथा सभी परमात्मा को आराध्य मानकर उनकी पूजा -अर्चना करके उनके आराधना मे लिप्त रहते है

भक्तिकाल मे भक्ति के कवियो ने हिन्दी साहित्य मे अपनी काव्य रचनाओ द्वारा जो योगदान दिया था / वो अमूल्य एवं अविस्मरणीय है।

भक्तिकाल मे मुख्य दो धारा प्रचलितथी

सगुण भक्ति धारा
निर्गुण भक्तिधारा

सगुण भक्तिधारा के कवि परमात्मा के सगुणरूप की उपासना करते थे। तथा अपने आराध्य के साकार रूप की उपासना करते थे।

सगुण भक्ति धारा मे भी कुछ कवियो ने श्री कृष्ण की उपासना की तथा कुछ ने श्री राम की उपासना की

Paper Code

अतः इसगुण भक्ति धारा भी दो भागो मे विभाजित हो गई।

रामाश्रयी काव्यधारा
कृष्णाश्रयी काव्यधारा

वे कवि जो श्री राम को आराध्य मानकर काव्य रचना करते थे उन्हे रामाश्रयी काव्यधारा तथा वे कवि जो कृष्ण को आराध्य मानकर काव्य रचना करते उन्हे कृष्णाश्रयी काव्यधारा का कवि कहा गया।

तुलसीदास रामाश्रयी काव्यधारा के प्रमुख कवि माने जाते है। क्योकि श्री राम के चरित्र एवं काव्य के क्षेत्र मे जो स्थान गोस्वामी तुलसीदास जी का है वो किसी अन्य कवि का नही

तुलसीदास ने अपनी रचना रामचरितमानस द्वारा साहित्य को अमूल्य योगदान दिया है।
तुलसीदास जी की अन्य रचनाऐं निम्न लिखित है।

रामचरितमानस	जानकी मंगल
दोहावली	पार्वती मंगल
कवितावली	बरवै रामायण
गीतावली	रामलला नहछू
रामाज्ञा प्रश्न	हनुमान चारित

तुलसीदास ने अपनी रचनाओ से साहित्य मे अति महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

तुलसीदास के काव्य रचनाओ के कारण वे जन मानस में अत्यन्त लोकप्रिय थे। उनकी लोकप्रियता अन्य कारणो से भी है।

अनन्य भक्त कवि — तुलसीदास राम जी के एक अनन्य भक्त थे इसलिए इनकी भक्ति भावना इनके काव्य मे झलकती थी जो पाठको को अत्यन्त अच्छी एवं रूचिकर लगती थी। जिससे वे बहुत लोकप्रिय हुए।

सरल सहज भाषा — तुलसीदास ने अपने काव्य मे संस्कृतनिष्ठ बोली तथा भाषा का उपयोग ना करके सुन्दर सहज सरल भाषा का प्रयोग किया है। जिससे पाठको का काव्य को पढने समझने मे कठिनाई का सामना नही करना पड़ता था। जिस कारण उनके पाठक उसका अत्यन्त सरलता से उनके काव्य को पढकर उसका आनन्द लेते थे।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के अनुसार — तुलसीदास को आचार्य शुक्ल ने सर्वश्रेष्ठ कवि की संज्ञा दी है। उनके अनुसार तुलसीदास जैसा काव्य रचना कोई कर ही नही सकता। वे अपने काव्य मे श्रेष्ठ है।

आचार्य शुक्ल के अनुसार तुलसीदास ने जो आलोचनात्मक शैली अपने रामचरित मानस मे अपनाई है वह वंदनीय है।
उनकी भाषा पर पूर्णत: पकड थी। तथा अपने मन के भावो को उन्होने इतने सरल तथा सहज भाषा मे कह दिया है वही गोस्वामी जी की काव्य की सर्वश्रेष्ठ विशेषता है।

रस की अनुभूति — तुलसीदास ने अपने काव्य मे इतने सरल भाषा मे अपने मन के भावो को व्यक्त किया है कि श्रोता या पाठक अपने पाठ को पढकर सहज ही उसमे रस की अनुभूति करता है जो उसे उस काव्य के प्रति आसक्त करता है तथा पाठ या काव्य की ओर रूचिकर बनाता है।

समन्वयवादी काव्य शैली — तुलसीदास ने अपने जीवन काल मे अनेक प्रदेशो मे विचरण किया जिससे उनकी भाषा मे अन्य देशो प्रदेशो के भी शब्द उजागर होते है तथा अन्य प्रदेशो की भाषाओ तथा उनकी शैलियो का समावेश अपनी काव्य मे तुलसीदास ने अत्यंत सहजता से किया है।
जिस कारण इनके काव्य मे समन्वयवादी प्रवृत्ति साफ झलकती है। तथा इनकी भाषा के प्रभाव से कवि मे उन्हे समन्वय वादी कवि कहा जाता है।

Do Not Write anything in this Portion

Paper Code

लोक भाषा मे रचना — तुलसी दास ने अपनी अधिकतम रचनाए लोक भाषा मे की है जिससे पाठक उन्हे सहजता से पढ़ तथा समझ लेते है तुलसी उस उपस्थित रस का आस्वाद करते है। लोक भाषा का प्रयोग उनके काव्य को और अधिक लोकप्रिय बनाता है।